जवानी कैसे गुज़ारें ?

Jawani Kaise Guzaren ? (Hindi)

बयान : 2

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

18 रबीउ़ल अव्वल 1412 हि. मुत़ाबिक़ 26 सितम्बर 1991 ई. बरोज़ जुमा'रात हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** ﷺ ने दा'वते इस्लामी के अव्वलीन म-दनी मर्कज़ जामेअ़ मस्जिद गुलज़ारे ह़बीब (वाक़ेअ़ गुलिस्ताने ओकाड़वी बाबुल मदीना कराची) में "जवानी की इ़बादत के फ़ज़ाइल" के उ़न्वान से बयान फ़रमाया, जिस की मदद से येह रिसाला नए मवाद के काफ़ी इज़ाफ़े के साथ मुरत्तब किया गया है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ।

(المُستطرَف ج١ ص٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आखि़र एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

जवानी कैसे गुज़ारें ?

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का येह बयान मजलिसे **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में पेश किया है । मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस बयान को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है । इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये ।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की
मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 9374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

जवानी कैसे गुज़ारें ?

﴾शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला मुकम्मल पढ़ लीजिये । اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ अज्रो सवाब की दौलत पाने के साथ साथ जवानी की इबादत और इस की क़द्र व अहम्मिय्यत जानने का मौक़अ़ मिलेगा ।﴿

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़फ़िय्यत निशान है : ''ऐ लोगो ! बेशक तुम में से बरोज़े क़ियामत उस की दह्शतों और ह़िसाब किताब से जल्द नजात पाने वाला वोह शख़्स होगा, जिस ने दुन्या में मुझ पर **कसरत से दुरूद पढ़ा होगा ।**''

(جَمْعُ الْجَوَامِع، ۱۲۹/۹، حدیث: ۲۷۶۸۶ مختصراً)

ह़श्र की ती-रगी सियाही में नूर है, शम्ए पुर ज़िया है दुरूद
छोड़ियो मत दुरूद *को काफ़ी राहे जन्नत का रहनुमा है* दुरूद

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जवानी की तलाश

ह़िकायत बयान की जाती है कि एक बूढ़ा शख़्स कहीं से गुज़र रहा था, बुढ़ापे की वज्ह से उस की कमर इस क़दर झुकी हुई थी कि चलते हुए यूं लगता था कि येह बूढ़ा शख़्स

www.dawateislami.net

ज़मीन से कुछ तलाश कर रहा है। एक नौ जवान को मस्ख़री सूझी और कहने लगा : बड़े मियां ! क्या तलाश कर रहे हो ? बात अगर्चे ग़ुस्सा दिलाने वाली थी मगर उस बूढ़े ने सब्र व बरदाश्त और समझदारी का कमाल मुज़ा-हरा किया और त़न्ज़ के इस ज़हरीले कांटे के जवाब में फ़िक्र अंगेज़ म-दनी फूल पेश करते हुए फ़रमाया : **"बेटा ! मैं अपनी जवानी तलाश कर रहा हूं।"** तीखे जुम्ले का येह ख़िलाफ़े तवक़्क़ोअ़ ह़ैरान कुन जवाब सुन कर वोह नौ जवान चौंका और कहने लगा : बाबा जी ! आप की बात समझ नहीं आई, क्या जवानी भी कभी ढूंडी जा सकती है ? और क्या येह एक दफ़्आ़ गुम हो कर फिर कभी किसी को मिली है ? फ़रमाया : बेटा ! येही तो अफ़्सोस है कि जब जवानी की ने'मत मेरे पास थी उस वक़्त इस की पासदारी न कर सका और आज जब मैं इस से हाथ धो बैठा तब इस की अहम्मिय्यत का एह़सास हुवा। काश ! मुझे जवानी का ज़माना एक बार फिर मिल जाता तो माज़ी में होने वाली ग़-लतियों और कोताहियों की तलाफ़ी करता और ख़ूब दिल लगा कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करता।

اَلَا لَيْتَ الشَّبَابَ يَعُوْدُ يَوْمًا
فَاُخْبِرُهٗ بِمَا فَعَلَ الْمَشِيْبُ

या'नी हाए काश ! मेरी जवानी कभी पलट कर आती, तो मैं उस को बताता कि बुढ़ापे ने मेरे साथ क्या सुलूक किया।

फिर एक आहे सर्द दिले पुरदर्द से खींची और कहा :

www.dawateislami.net

अफ़्सोस सद अफ़्सोस ! मैं अपनी जवानी की दौलत लुटा बैठा, लेकिन **''अब पछताए क्या होवत जब चिड़ियां चुग गईं खेत ।''** मैं ने जवानी की ना क़द्री की, उस वक़्त नेकी की न आख़िरत की कोई तय्यारी की और यूंही मेरी जवानी ग़फ़्लत के बिस्तर पर सोते गुज़र गई ।

दिन भर खेलों में ख़ाक उड़ाई लाज आई न ज़र्रों की हंसी से
शब भर सोने ही से ग़रज़ थी तारों ने हज़ार दांत पीसे

(ह़दाइक़े बख़्शिश)

अब जब कि बुढ़ापा त़ारी हो गया, तो सिह़्ह़त कमज़ोर और जिस्म लाग़र हो गया, कस्रते इबादत का शौक़ तो पैदा हुवा लेकिन बुढ़ापे के सबब ह़ौसला साथ छोड़ गया ।

फिर वोह ज़ईफ़ुल उ़म्र शख़्स उस नौ जवान पर **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए कहने लगा : **बेटा ! अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो एह़सान से तुम अभी **नौ जवान** हो, इस से फ़ाएदा उठा लो, इबादत पर कमर बस्ता हो जाओ, कमर झुकने से पहले रब तआ़ला के हुज़ूर सर को झुका लो, वरना बुढ़ापे में मेरी त़रह़ कमर झुकाए जवानी को तलाश करते फिरोगे लेकिन ह़स्रतो नदामत के सिवा कुछ न मिलेगा । कफ़े अफ़्सोस मलते रहोगे लेकिन हाथ कुछ न आएगा और ह़ालात का कुछ इस त़रह़ से सामना होगा : **''बचपन खेल में खोया, जवानी नींद भर सोया, बुढ़ापा देख कर रोया ।''**

इस मुश्फ़िक़ाना और नासिह़ाना अन्दाज़े गुफ़्त–गू और

www.dawateislami.net

इन्फ़िरादी कोशिश के म-दनी फूलों की ख़ुश्बू ने उस नौ जवान के दिलो दिमाग़ को मुअ़त्त़र और उसे बेह़द मु-तअस्सिर किया । थोड़ी देर पहले उस बूढ़े पर त़न्ज़ के तीर चलाने वाला नौ जवान इन्फ़िरादी कोशिश से मु-तअस्सिर हो कर अब उसी बूढ़े के सामने आयिन्दा के लिये जवानी की क़द्र और परहेज़ गारी की ज़िन्दगी बसर करने का अ़ह्दो पैमान कर रहा था ।

शहज़ादए आ'ला ह़ज़रत, मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द मौलाना मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن अपने ना'तिया दीवान **''सामाने बख़्शिश''** में जवानी की क़द्रदानी का दर्स देते हुए फ़रमाते हैं :

रियाज़त के येही दिन हैं, बुढ़ापे में कहां हिम्मत
जो कुछ करना हो अब कर लो, अभी नूरी जवां तुम हो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ईंट के जवाब में फूल पेश कीजिये !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा पुर ह़िक्मत ह़िकायत अपने दामन में इ़ब्रत व नसीह़त के बेश बहा म-दनी फूल लिये हुए है । उन में से एक म-दनी फूल येह है कि अगर कोई आप से तन्क़ीदी लहजा या त़न्ज़िया रवय्या अपनाए तो ईंट का जवाब पथ्थर से देने के बजाए **सब्रो तह़म्मुल से काम लीजिये ।** मौक़अ़ की मुना-सबत से अह़सन अन्दाज़ में समझाने की कोशिश और ज़हरीले कांटों के जवाब में म-दनी फूल पेश करने की रविश اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ म-दनी नताइज से सरफ़राज़ करेगी

www.dawateislami.net

बल्कि इस म-दनी मक़्सद की राह में आसानियां पैदा कर के म-दनी इन्क़िलाब बरपा कर देगी कि **''मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।''** اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

तू पीछे न हटना कभी ऐ प्यारे मुबल्लिग़
शैत़ान के हर वार को नाकाम बना दे

(वसाइले बख़्शिश)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नेकी की दा'वत आ़म कीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस वाक़िए़ से येह म-दनी फूल भी मिला कि मुसल्मानों को समझाने और **''नेकी की दा'वत''** आ़म करने की कोशिश करते रहना चाहिये कि इस में अपनी और दीगर इस्लामी भाइयों की दीनी व दुन्यवी भलाइयां पोशीदा हैं, जैसा कि पारह **27 सू-रतुज़्ज़ारियात**, आयत नम्बर **55** में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

وَذَكِّرْ فَاِنَّ الذِّكْرٰى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۵۵﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और समझाओ कि समझाना मुसल्मानों को फ़ाएदा देता है।

मुझे तुम ऐसी दो हिम्मत आक़ा दूं सब को नेकी की दा'वत आक़ा
बना दो मुझ को भी नेक ख़स्लत नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

मताए वक़्त की क़द्र कीजिये

इस ह़िकायत से येह भी पता चला कि वक़्त की ना क़द्री बिल आख़िर नदामत लाती है, ख़ुसूसन अय्यामे जवानी में बे फ़िक्री, ला परवाही और इन ह़सीन लम्ह़ात की बे क़द्री बुढ़ापे में पछतावे का सबब बनती है। क्यूं कि जिन की जवानी का सफ़र गुनाहों की तारीकियों में गुज़रता है जब वोह बुढ़ापे के आ़लम में नेकियों की रोशनियों की त़रफ़ रुख़ मोड़ते हैं तो बहुत देर हो चुकी होती है और उस वक़्त आदमी कुछ करना भी चाहे तो जिस्म व आ'ज़ा की कमज़ोरी और सिह़्ह़त की ख़राबी ह़ौसले पस्त कर देती है, लिहाज़ा जब तक जवानी की ने'मत है और सिह़्ह़त सलामत है, तो इस को ग़नीमत जानते हुए ज़ियादा से ज़ियादा इबादत और अच्छे कामों की आ़दत पर इस्तिक़ामत पाने की कोशिश कीजिये और अगर आज नेकियों से जी चुरा कर, बदियों में दिल लगा कर हिम्मत व सलाह़ियत और वक़्त की ने'मत गंवा बैठे तो कल पछतावा होगा लेकिन उस वक़्त का पछताना और अफ़्सोस से हाथ मलना किसी काम न आएगा। वक़्त की तेज़ रफ़्तार धार हमारे लैलो नहार (या'नी दिन रात) को काटती चली जा रही है, वक़्त की लगाम कब किसी के हाथ आई है और वक़्त की गाड़ी से कौन कहे कि ज़रा आहिस्ता चल ! पस आज वक़्त की क़द्र कीजिये और इस से फ़ाएदा उठाइये वरना फिर गया वक़्त याद तो आएगा मगर हाथ न आएगा।

www.dawateislami.net

सदा ऐश दौरां दिखाता नहीं

गया वक़्त फिर हाथ आता नहीं

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

जवानी की ता'रीफ़

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ़ **1548** सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "**फ़ैज़ाने सुन्नत**" जिल्द अव्वल सफ़ह़ा **713** पर है **:** "लुग़ात की कुतुब के मुत़ाबिक़ (बालिग़ होने से ले कर) **30** या **40** बरस तक आदमी जवान रहता है, **30** या **50** बरस जवानी और बुढ़ापे का दरमियानी वक़्फ़ा या'नी **उधेड़** और इस के बा'द **बुढ़ापा** आ जाता है ।"

फ़ैज़ाने क़ुरआन और नौ जवान

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दिमाग़ी और जिस्मानी सलाहिय्यतों से सही़ह़ मा'नों में जवानी ही में काम लिया जा सकता है, इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने और मुत़ा-लआ़ करने की उ़म्र भी जवानी ही है, बुढ़ापे में तो बारहा अ़क़्लो फ़ह्म की क़ुव्वतें बेकार हो कर रह जाती हैं, ग़ौरो फ़िक्र की सलाहिय्यतें मांद (हलकी, कमज़ोर) पड़ जाती हैं, याद दाश्त का ख़ज़ाना ख़ाली हो जाता है, दिमाग़ ख़लल का शिकार होने के सबब इन्सान बच्चों की सी ह़-र-कतें करने लग जाता है और उस से

www.dawateislami.net

बा'ज़ अवक़ात ऐसी **मुज़्हिका ख़ैज़** ह़-रकात का सुदूर होता है कि बे इख़्तियार हंसी आ जाए। लेकिन ख़ुश ख़बरी है उस नौ जवान के लिये जो तिलावते क़ुरआन का आ़दी है कि अगर ऐसे नौ जवान को बुढ़ापा आया तो वोह इन आज़्माइशों और आफ़तों से मह़फ़ूज़ रहेगा। जैसा कि मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْغَنِى नक़्ल फ़रमाते हैं : ''ह़ज़रते सय्यिदुना इ़क्रिमा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : जो मुसल्मान तिलावते क़ुरआन का आ़दी हो, उस पर اِنْ شَآءَ اللهعَزَّوَجَلَّ येह (या'नी जवानी में ह़ासिल किये गए इ़ल्म को बुढ़ापे में भूलने की) ह़ालत त़ारी न होगी।''

(नूरुल इ़रफ़ान, पारह : 17, अल ह़ज्ज, तह़्तल आयह : 5)

फ़िल्मों से डिरामों से दे नफ़रत तू इलाही ! बस शौक़ मुझे ना'तो तिलावत का ख़ुदा दे

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जवानी की इ़बादत बुढ़ापे में सबबे आ़फ़िय्यत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरा रिवायत से पता चला कि तिलावते क़ुरआन करने वाला नौ जवान अगर बुढ़ापे की दहलीज़ पर पहुंच गया तो क़ुरआन की तिलावत की ब-र-कत से उस ह़ालत में निस्यान (या'नी भूल जाने) की आफ़त से मह़फ़ूज़ रहेगा। येह मन्ज़र तो आ़म मुला-ह़ज़ा किया जा सकता है कि अक्सर बूढ़े हिज़्यान (या'नी बेहूदा गोई) व निस्यान (भूल जाने) के मरज़ में मुब्तला नज़र आते हैं लेकिन बा'ज़ ख़ुश नसीब

www.dawateislami.net

ऐसे भी हैं जो अगर्चे बुढ़ापे की मन्ज़िल से हम-कनार हैं, लेकिन फिर भी इल्मी जलालत और ज़ेहनी कुव्वत की ऐसी शानो शौकत कि देखने वाले को वर्तए हैरत (या'नी इन्तिहाई हैरत) में डाल दें, इन सारी अ-ज़-मतों का एक सबब **जवानी की इबादत** और कुरआने पाक की तिलावत है।

मद्र-सतुल मदीना बालिग़ान

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! जवानों में इबादतो रियाज़त का ज़ौक़ो शौक़ बढ़ाने और ता'लीमे कुरआन को आम करने के लिये तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक **दा'वते इस्लामी** की भरपूर कोशिशें क़ाबिले सिताइश हैं। जिन में से एक "**मद्र-सतुल मदीना बालिग़ान**" भी है, दुन्या भर में मुख़्तलिफ़ मक़ामात और मसाजिद में उ़मूमन बा'द नमाज़े इशा हज़ारहा **मद्र-सतुल मदीना** की तरकीब होती है, जिन में इस्लामी भाई सहीह मख़ारिज से, हुरूफ़ की दुरुस्त अदाएगी के साथ कुरआने करीम सीखते, दुआएं याद करते, नमाज़ें दुरुस्त करते और सुन्नतों की ता'लीम मुफ़्त हासिल करते हैं।

येही है आरज़ू ता'लीमे कुरआं आम हो जाए
हर इक परचम से ऊंचा परचमे इस्लाम हो जाए

मद्र-सतुल मदीना बालिग़ात

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल के तहत कुरआने पाक की ता'लीम (हिफ़्ज़ व नाज़िरा) को आम

www.dawateislami.net

करने के लिये इस्लामी भाइयों के मद्र-सतुल मदीना बालिग़ान के साथ साथ बड़ी उ़म्र की इस्लामी बहनों के मद्र-सतुल मदीना बालिग़ात की भी तरकीब है, जिस में हज़ारों इस्लामी बहनें कुरआने पाक की मुफ़्त ता'लीम ह़ासिल करती हैं। इन मदारिस में इस्लामी बहनें ही इस्लामी बहनों को पढ़ाती हैं, इस के इ़लावा अन्दरून व बैरूने मुल्क ला ता'दाद मदारिस बनाम **''मद्र-सतुल मदीना''** क़ाइम हैं। पाकिस्तान में (र-जबुल मुरज्जब 1435 हि. तक) कमो बेश **2064** मदारिस क़ाइम हैं, जिन में तक़रीबन **101410** म-दनी मुन्नों और म-दनी मुन्नियों को ह़िफ़्ज़ व नाज़िरा की मुफ़्त ता'लीम दी जा रही है।

अ़ता हो शौक़ मौला मद्रसे में आने जाने का
ख़ुदाया ज़ौक़ दे कुरआन पढ़ने का, पढ़ाने का

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

म-दनी माह़ोल ने अदना को आ'ला कर दिया

दा'वते इस्लामी के शो'बे **''मद्र-सतुल मदीना बराए बालिग़ान''** ने एक नौ जवान के लिये कुरआन सीखना, अख़्लाक़ियात संवारना, इबादात में दिल लगाना बल्कि यूं समझिये कि **आख़िरत का सामान करना आसान कर दिया है।** जैसा कि एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है : ''मेरे गुनाह बहुत ज़ियादा थे। जिन में مَعَاذَالله **V.C.R** की लीड (Lead) सप्लाय करना, रातों को औबाश लड़कों के साथ घूमना, रोज़ाना

www.dawateislami.net

दो बल्कि तीन तीन फ़िल्में देखना, वेराइटी प्रोग्राम्ज़ (Variety programs) में रातें काली करना शामिल है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! बाबुल मदीना कराची के अ़लाक़े **''नयाआबाद''** के एक इस्लामी भाई की मुसल्सल **इन्फ़िरादी कोशिश** की ब-र-कत से अ़लाक़े के **मद्र-सतुल मदीना** (बराए बालिग़ान) में जाने की तरकीब बनी और इस त़रह़ **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बत मिली और मैं तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता हो कर म-दनी कामों में मसरूफ़ हो गया।''

(ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 147)

हमें आ़लिमों और बुज़ुर्गों के आदाब सिखाता है हर दम सदा म-दनी माह़ोल
हैं इस्लामी भाई सभी भाई भाई है बेह़द मह़ब्बत भरा म-दनी माह़ोल

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जवानी को ग़नीमत जानिये

जलीलुल क़द्र ताबेई ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन मैमून औदी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स को नसीह़त करते हुए फ़रमाया : पांच (चीज़ों) को पांच से पहले ग़नीमत जानो : ''**बुढ़ापे से पहले जवानी को**, बीमारी से पहले तन्दुरुस्ती को, फ़क़ीरी से पहले अमीरी को, मसरूफ़िय्यत से पहले फ़ुरसत को और मौत से पहले ज़िन्दगी को।''

(مِشْكَاةُ الْمَصَابِيْح،كتاب الرقاق، الفصل الثانى، ٢/٢٤٥، حديث:٥١٧٤)

www.dawateislami.net

मश्हूर सूफ़ी शाइर ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ मुस्लिहुद्दीन सा'दी शीराज़ी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْهَادِی फ़रमाते हैं :

کُنُوْنَتْ کِہ دَسْتَست خارِی بُکُنْ
دِگر کِی بَرْآرِی تُو دَسْتْ اَزْ کَفَن

(بوستانِ سعدی، باب اوّل،درعدل و تدبیر و رای، ص۴۸)

(या'नी ऐ ग़ाफ़िल शख़्स ! अब जब कि तेरे सिह़्ह़त व हिम्मत वाले हाथ कुशादा हैं तो इन हाथों से कोई काम कर ले, कल जब येह कफ़न में बंध जाएं तो फिर खुलना कहां नसीब !)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जवानी की क़द्र कीजिये

जवानी के मु-तअ़ल्लिक़ ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْغَنِی के तह़रीर कर्दा कलाम का ख़ुलासा है : जवानी खेलकूद में गंवा कर बुढ़ापे में जब कि आ'ज़ा बेकार हो जाएं, कस्रते इ़बादत की ख़्वाहिश करना बे वुक़ूफ़ी है, जो करना है जवानी में कर लो कि जवाने सालेह़ का बहुत बड़ा द-रजा है। लिहाज़ा सिह़्ह़त, जवानी, मालदारी और ज़िन्दगी को राएगां (या'नी ज़ाएअ़) न जाने दो, इस में नेक आ'माल कर लो कि येह ने'मतें बार बार नहीं मिलतीं । मियां मुह़म्मद बख़्श رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं :

सदा न ह़ुस्न जवानी रहंदी, सदा न सोह़बते यारां
सदा न बुलबुल बाग़ां बोले, सदा न बाग़ बहारां

www.dawateislami.net

या'नी येह ह़सीन जवानी हमेशा सलामत नहीं रहती और न ही दोस्त व अह़बाब की सोह़बतें हमेशा बाक़ी रहती हैं । बाग़ में रोज़ाना चह-चहाने वाली बुलबुलें और बाग़ की बहारें भी सदा रहने वाली नहीं । (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 7, स. 16 ब तसर्रुफ़)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ब वक़्ते रिह़्लत ह़ज़रत अमीरे मुआ़विया का फ़रमान

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का जब वक़्ते विसाल क़रीब आया, तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''मुझे बिठाओ ।'' जब बिठाया गया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **ज़िक्रुल्लाह** और **तस्बीह़** में मश्ग़ूल हो गए । फिर रोते हुए अपने आप को मुख़ात़ब कर के (बत़ौरे आ़जिज़ी) फ़रमाने लगे : ''ऐ मुआ़विया (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ! अब बुढ़ापे और कमज़ोरी के वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र याद आया, उस वक़्त क्या था जब **जवानी की शाख़** तरो ताज़ा थी ।''

(لُبَابُ الْاِحْیَاء، الباب الاربعون فی ذکر الموت ومابعدہ، ص۳۵۲، مختصراً)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बुज़ुर्गों की आ़जिज़ी हमारे लिये रहनुमाई

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारे अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللّٰہُ السَّلَام किस क़दर नेकियों के क़द्रदान और आ़जिज़ी के पैकर थे कि मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जलीलुल

www.dawateislami.net

क़द्र सहा़बी होने और सारी ज़िन्दगी नेकियों में बसर करने के बा वुजूद ह़सरत है कि काश ! कस्रते इ़बादतो रियाज़त की मज़ीद सआ़दत नसीब हो जाती, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इस आ़जिज़ी में हमारे लिये रहनुमाई है कि ऐ जवानो ! जवानी बहुत बड़ी ने'मत है, इस की क़द्र करो, इसे फ़ुज़ूलियात में मत गुज़ारो वरना जब होश आएगा तो उस वक़्त तीर कमान से निकल चुका होगा और कमान से निकले तीर वापस नहीं आया करते।

غَافِلْ مَنَشِیں نہ وَقْت بَازِی سْت
وَقْت ھُنَرَ اسْت وَکَارْسَازِی سْت

या'नी ऐ नौ जवान ! ग़ाफ़िल न बैठ, येह फ़ुरसत व ग़फ़्लत का वक़्त नहीं बल्कि हुनर सीखने और कामकाज करने का वक़्त है।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

इ़बादत की ब-र-कत से बुढ़ापे में भी जवान

ह़ज़रते अ़ल्लामा इब्ने रजब ह़म्बली عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی जवानी में इ़बादत के मु-तअ़ल्लिक़ फ़रमाते हैं : "जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को उस वक़्त याद रखा जब वोह जवान और तुवाना था, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस का उस वक़्त ख़याल रखेगा जब वोह बूढ़ा और कमज़ोर हो जाएगा और उसे बुढ़ापे में भी अच्छी क़ुव्वते समाअ़त, बसारत, ता़क़त और ज़हानत अ़ता फ़रमाएगा। ह़ज़रते अबुत्त़य्यिब त़बरी رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने सो साल से ज़ियादा उ़म्र पाई, आप رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ज़ेह्नी व जिस्मानी लिहा़ज़ से

www.dawateislami.net

तन्दुरुस्त और तुवाना थे, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से किसी ने सिह़्ह़त का राज़ पूछा तो इर्शाद फ़रमाया : "मैं ने जवानी में अपनी जिस्मानी सलाह़िय्यतों को गुनाह से मह़फ़ूज़ रखा और आज जब मैं बूढ़ा हो गया हूं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन्हें मेरे लिये बाक़ी रखा है।" इस के बर अ़क्स ह़ज़रते जुनैद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने एक बूढ़े शख़्स को देखा जो लोगों से मांग रहा था, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "इस शख़्स ने जवानी में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ (के हुक़ूक़) को ज़ाएअ़ किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने बुढ़ापे में इस (की क़ुव्वत) को ज़ाएअ़ फ़रमा दिया।" (مجموعہ رسائل ابن رجب، ۳/۱۰۰ ملخصاً)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जवानी की मेह़नत बुढ़ापे में सहूलत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ख़ुश ख़बरी है उस सालेह़ जवान के लिये जिस की जवानी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत में गुज़री और इ़बादत करते करते बुढ़ापे की मन्ज़िल आ गई और बुढ़ापा भी ऐसा कि ज़ौक़े इ़बादत तो है लेकिन सिह़्ह़त व हिम्मत साथ नहीं दे रही, तो اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ उसे इस लाचारी के आ़लम में भी सिह़्ह़त व जवानी में की हुई इ़बादतों जितना सवाब मिलता रहेगा चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं : "जब बन्दा (ह़ालते इस्लाम में नेकियां करते हुए) उ़म्र के आख़िरी ह़िस्से में पहुंच जाए तो **अल्लाह तआ़ला** उस के नामए आ'माल में बराबर नेकियां

www.dawateislami.net

सब्त (तह़रीर) फ़रमाता रहता है जो वोह अपनी सिह़ह़त के ज़माने में किया करता था।" (مُسْنَدِ اَبِیْ یَعْلٰی، مسند انس بن مالک، ۳/۲۹۳،حدیث:۳۶۶۶ملتقطاً)

सालेह़ जवान के लिये बुढ़ापे में इन्आ़म

ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْهِ رَحمَةُ اللهِ الْغَنِی फ़रमाते हैं **:** जो बूढ़ा आदमी बुढ़ापे की वज्ह से ज़ियादा इ़बादत न कर सके मगर जवानी में बड़ी इ़बादतें करता रहा हो तो **अल्लाह तआ़ला** उसे मा'ज़ूर क़रार दे कर उस के नामए आ'माल में वोह ही जवानी की इ़बादत लिखता है। (**आ़रिफ़ बिल्लाह** ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ सा'दी शीराज़ी عَلَیْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं **:**)

رَسْمَ اسْتْ کِه مَالِکَانِ تَحْرِیْر　　آزَاد کُنَنْدْ بَنْدَهٔ پِیْر
اَے بَارِ خُدَا ، اَے عَالَمِ آرَا　　بَرْ سَعْدِی پِیْرِ خُوْد بَهْ بَخْشَا

(या'नी गु़लामों के मालिकों का त़रीक़ा है कि वोह बूढ़े गु़लाम को आज़ाद कर देते हैं, ऐ मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! ऐ दुन्या को आरास्ता करने वाले ! **ज़ईफ़ुल उ़म्र** सा'दी की भी बख़्शिश व मग़िफ़रत फ़रमा दे।) (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 7, स. 89)

लिहाज़ा जवानी की क़द्र करते हुए ज़ियादा से ज़ियादा इ़बादत कीजिये, ताकि कल जब बुढ़ापा ज़ियादा इ़बादत करने से मा'ज़ूर कर दे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाहे बेकस पनाह से सिह़ह़त व जवानी वाली इ़बादत जैसा सवाब मिलता रहे।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!　　صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

अल्लाह का मह़बूब बन्दा

ह़दीसे क़ुदसी है **:** ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से रिवायत है कि नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है **:** ''मेरी तक़्दीर पर ईमान लाने वाला, मेरे लिखे पर राज़ी रहने वाला, मेरे दिये हुए रिज़्क़ पर क़नाअ़त करने वाला और मेरी रिज़ा की ख़ात़िर अपनी नफ़्सानी शहवात को तर्क करने वाला **नौ जवान** मेरी बारगाह में मेरे बा'ज़ फ़िरिश्तों की मानिन्द है।'' (جَمْعُ الجَوَامِع،٩/٢٧٦،حدیث:٢٨٧١٤)

वाक़ेई ! अगर इन्सान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का मुत़ीओ़ फ़रमां बरदार और उस के मह़बूब रह़मते आ़-लमिय्यान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का सच्चा ग़ुलाम बन जाए तो वोह फ़िरिश्तों की मानिन्द बल्कि बा'ज़ फ़िरिश्तों से भी अफ़्ज़ल हो जाता है।

फ़िरिश्तों से बेहतर है इन्सान बनना   मगर इस में लगती है मेह़नत ज़ियादा

फ़िरिश्तों से अफ़्ज़ल कौन ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! याद रहे ! ''हमारे रसूल मलाएका के रसूलों से अफ़्ज़ल हैं और मलाएका के रसूल हमारे औलिया से अफ़्ज़ल हैं और हमारे औलिया अ़वामे मलाएका या'नी ग़ैरे रुसुल से अफ़्ज़ल हैं। फ़ुस्साक़ व फ़ुज्जार, मलाएका से किसी त़रह़ अफ़्ज़ल नहीं हो सकते।''

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 29, स. 391, **النبراس**، ٥٩٥)

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है, नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा अ़-ज़मत है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ऐसे शख़्स से मह़ब्बत फ़रमाता है जिस ने अपनी जवानी को इ़ताअ़ते ख़ुदा वन्दी के लिये वक़्फ़ कर दिया हो ।" (حِلْيَةُ الْاَوْلِيَاء،٥/٣٩٤،حديث:٧٤٩٦)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा दो रिवायात इ़ताअ़त शिआ़रों के लिये अपने दामन में कसीर ब-रकात व इ़नायात समोए हुए हैं कि जो सआ़दत मन्द अपनी उ़म्रे जवान ख़ुदाए ह़न्नान व मन्नान عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा वाले कामों और उस की बन्दगी में गुज़ारे, ना जाइज़ उमंगों और बुरी ख़्वाहिशों से अपने दामन को बचाए रखे, उस के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह से मक़ामे इ़ज़्ज़तो अ़-ज़मत और द-र-जए मह़बूबिय्यत पाने की उम्मीद व नवीद है क्यूं कि जवानी में नफ़्स के मुंहज़ोर घोड़े को लगाम देना मुश्किल होता है, इसी वज्ह से इ़बादते शबाब (या'नी जवानी की इ़बादत) को ज़ियादा फ़ज़ीलत ह़ासिल है, जैसा कि ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْغَنِی तह़रीर फ़रमाते हैं : "**जवानी में गुनाहों से बचे** और रब عَزَّوَجَلَّ को याद रखे चूंकि जवानी में आ'ज़ा क़वी और नफ़्स गुनाहों की त़रफ़ (ज़ियादा) माइल होता है इस लिये इस ज़माने की इ़बादत बुढ़ापे की इ़बादत से अफ़्ज़ल है ।" (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1, स. 435)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस दौरे पुर फ़ितन में जब कि बद क़िस्मती से कसीर नौ जवान क़ुरआनो सुन्नत से दूर, जवानी की मस्ती में मख़्मूर, हिर्सो ह-वसे दुन्या के नशे में चूर और नफ़्सो शैत़ान के हाथों मजबूर हो कर गुनाहों और बे ह़याइयों के सैलाब में बहते चले जा रहे थे कि तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** ने इस्लाह़े उम्मत का **अ़-लमे** हिम्मत बुलन्द किया और इस बे राह रवी व बे ह़याई के सैलाब को रोकने की काम्याब कोशिशों का सफ़र शुरूअ़ कर दिया। दा'वते इस्लामी की काम्याबी खुली किताब की मानिन्द आज सब पर आशकार (या'नी वाज़ेह़) है, कि वोह नौ जवान जो शैत़ाने ना हन्जार और नफ़्से बे लगाम के ग़ुलाम नज़र आते थे, ख़ुश क़िस्मती से **दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता हुए तो उन की बे रौनक़ ज़िन्दगियों में म-दनी इन्क़िलाब की बहार आ गई और वोह अपनी जवानी के पुर बहार अय्याम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नाम पर वक़्फ़ कर के इस म-दनी मक़्सद को आ़म करने वाले बन गए कि **''मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।''**

नौ जवानाने मिल्लत और दा'वते इस्लामी

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल के कसीरुत्ता'दाद इन्क़िलाबी इक़्दामात में से एक अहम तरीन

www.dawateislami.net

क़दम येह है कि इस म-दनी माहोल ने गुनाहों में ग़ल्तां (लुढ़क्ने) और हर दम दुन्यवी मुस्तक़्बिल की बेहतरी की फ़िक्र में परेशां रहने वाले नौ जवां को शाहराहे तक़्वा पर गामज़न (या'नी चलने वाला) और फ़िक्रे आख़िरत के लिये मसरूफ़े अ़मल कर दिया। इसी म-दनी माहोल की ब-र-कत से कसीर नौ जवान इस्लामी भाई दुन्यवी रंगीनियों और जवानी की ग़फ़्लत शिआ़रियों से मुंह मोड़ कर राहे ख़ुदा के लिये वक़्फ़ हो गए। इसे दा'वते इस्लामी की इस्तिलाह में "**वक़्फ़े मदीना**" कहा जाता है।

मक़्बूल जहां भर में हो दा'वते इस्लामी

सदक़ा तुझे ऐ रब्बे ग़फ़्फ़ार ! मदीने का

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बेहतरीन ज़िन्दगी का राज़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप से म-दनी इल्तिजा है कि अपनी दुन्या व आख़िरत को बेहतर और ज़िन्दगी के लम्हात को क़ीमती बनाने के लिये **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माहोल से वाबस्ता हो कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत पर कमर बस्ता हो जाइये कि बेहतरीन ज़िन्दगी का राज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत व इताअ़त में मुज़्मर (या'नी पोशीदा) है। जैसा कि मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان फ़रमाते हैं : "ज़िन्दगी हर शख़्स की गुज़रती है, बेहतरीन ज़िन्दगी वोह है जो **रब**

www.dawateislami.net

तब-र-क व तआ़ला के लिये वक़्फ़ हो जाए । अल्लाह तआ़ला ने ऐसे ही लोगों के लिये स-दक़ात का ख़ुसूसी हुक्म दिया जो अपनी ज़िन्दगी **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के लिये वक़्फ़ कर चुके।'' (तफ़्सीरे नईमी, जि. 3, स. 134, मुल्तक़ित़न)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

क़ज़ा ह़क़ है, मगर इस शौक़ का अल्लाह वाली है
जो उन की राह में जाए वोह जान अल्लाह वाली है

(ह़दाइक़े बख़्शिश)

सत्तर सिद्दीक़ीन का सवाब पाने वाला

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत फ़रमाते हैं **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़राम कर्दा चीज़ों से बचने और उस के अह़कामात पर अ़मल करने वाले नौ जवान से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है तेरे लिये सत्तर सिद्दीक़ों के बराबर सवाब है।

(الترغیب فی فضائل الاعمال، باب فضل عبادۃ الشاب الخ، ص۷۸ مختصرا)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ह़क़ीक़ी बन्दा

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

www.dawateislami.net

से मरवी है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपनी मख़्लूक़ में उस ख़ूब-रू नौ जवान को सब से ज़ियादा पसन्द फ़रमाता है कि जिस ने अपनी जवानी और हुस्नो जमाल को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत में सर्फ़ कर दिया हो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़िरिश्तों के सामने ऐसे बन्दे पर फ़ख़्र करता और इर्शाद फ़रमाता है : "येह मेरा ह़क़ीक़ी बन्दा है ।"

(الترغیب فی فضائل الاعمال، باب فضل عبادة الشاب الخ، ص۷۸)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कितने ख़ुश बख़्त हैं वोह नौ जवान जिन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में महबूबिय्यत का शरफ़ ह़ासिल हो जाए, जिन की जवानी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त में गुज़री, बा वुजूद क़ुदरत के जिन का दामन नफ़्स की चालों और शैत़ान के जालों में न उलझा और जिन पर ख़ौफ़े ख़ुदा का ग़-लबा रहा, उन ख़ुश नसीबों के लिये ज़िक्र कर्दा रिवायते मुबा-रका मुज़्दए जां फ़िज़ा है और ऐसा नौ जवान मुआ़-शरे में भी मक़ामो मर्तबा और इ़ज़्ज़तो अ़-ज़मत का ह़ामिल है ।

वोही जवां है क़बीले की आंख का तारा
शबाब जिस का है बे दाग़, ज़र्ब है कारी

बा ह़या नौ जवान

जवानी की बहारों को मदीने की ख़ुश्बूओं से मुअ़त्त़र करने, आ़लमे शबाब को गुनाहों के दाग़ धब्बों से बचाने और

www.dawateislami.net

शर्मो ह़या का पैकर बनने के लिये **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना से सुन्नतों भरा बयान बनाम **"बा ह़या नौ जवान"** का केसिट हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! इस बयान का **64** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाला भी मक-त-बतुल मदीना से हदिय्यतन मिल सकता है। ख़ुद भी पढ़िये और दूसरों को भी तोह़्फ़तन पेश कीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ कसीर ब-र-कतों का ख़ज़ाना हाथ आएगा।

जवानों को बे राह रवी व सुस्ती की रविश छोड़ने, अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की पैरवी में दीनो मिल्लत की ख़िदमत करने और दीने इस्लाम को ही दुन्या व आख़िरत में काम्याबी का ज़रीआ़ समझने का ज़ेह्न देते हुए शाइ़र ने क्या ख़ूब कहा है :

तेरे सोफ़े हैं अफ़रंगी, तेरे क़ालीं हैं ईरानी लहू मुझ को रुलाती है जवानों की तन-आसानी
अमारत क्या, शकोहे ख़ुसरवी भी हो तो क्या ह़ासिल न ज़ोरे ह़ैदरी तुझ में, न इस्तिग़नाए सलमानी
न ढूंड इस चीज़ को तहज़ीबे ह़ाज़िर की तजल्ली में कि पाया मैं ने इस्तिग़ना में मे'राजे मुसल्मानी

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जवानी ने'मते ख़ुदा वन्दी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जवानी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बहुत बड़ी ने'मत है जिसे येह ने'मत मिले उसे इस की क़द्र करते हुए ज़ियादा से ज़ियादा वक़्त इबादत व इत़ाअ़त में गुज़ारना चाहिये, वक़्त के अनमोल हीरों को नफ़्अ़ रसानियों का

www.dawateislami.net

ज़रीआ़ बनाना चाहिये। ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان नक़्ल फ़माते हैं : "जवानी की इ़बादत बुढ़ापे की इ़बादत से अफ़्ज़ल है कि इ़बादात का अस्ल वक़्त जवानी है। शे'र

कर जवानी में इ़बादत काहिली अच्छी नहीं — जब बुढ़ापा आ गया कुछ बात बन पड़ती नहीं
है बुढ़ापा भी ग़नीमत जब जवानी हो चुकी — येह बुढ़ापा भी न होगा मौत जिस दम आ गई

वक़्त की क़द्र करो, इसे ग़नीमत जानो। गया वक़्त फिर हाथ आता नहीं।" (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 3, स. 167) और ख़ुसूसन अय्यामे जवानी के अवक़ात की क़द्रदानी बहुत ज़रूरी है क्यूं कि **जवानी** में इन्सान के आ'ज़ा मज़बूत़ और त़ाक़त वर होते हैं, जिस की वज्ह से अह़काम व इ़बादात की बजा आ-वरी, तन्दही और बड़ी ख़ुश उस्लूबी के साथ मुम्किन होती है, बुढ़ापे में फिर येह बहारें कहां नसीब ! उस वक़्त तो मस्जिद तक जाना भी दुश्वार हो जाता है। भूक प्यास की शिद्दत को बरदाश्त करने की हिम्मत भी नहीं रहती, नफ़्ल तो कुजा फ़र्ज़ रोज़े पूरे करना भी भारी पड़ जाते हैं और वैसे भी जवानी की इ़बादत इम्तियाज़ी ह़ैसिय्यत रखती है जैसा कि

इ़बादत गुज़ार जवान की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है, नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم का इर्शादे अ़ज़ीम है : "सुब्ह़ के वक़्त इ़बादत करने वाले नौ जवान को

www.dawateislami.net

बुढ़ापे में इबादत करने वाले बूढ़े पर ऐसी ही फ़ज़ीलत हासिल है कि जैसी मुर-सलीन (عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) को तमाम लोगों पर ।"

(جمع الجوامع،٥/٢٣٥،حدیث:١٤٧٦٩)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस रिवायत से मा'लूम हुवा कि इबादत गुज़ार जवान यक़ीनन ख़ुश बख़्त है, उस के लिये बहुत सारी फ़ज़ीलतों और सआदतों की नवीद (या'नी ख़ुश ख़बरी) है, लेकिन इस त़रह़ की रिवायात से कोई येह मत़लब अख़्ज़ न करे कि बूढ़े तो किसी खाते में ही नहीं । **मेरे प्यारे इस्लामी भाइयो !** ऐसा नहीं, याद रखिये ! येह इस्लामी मुआ-शरे की इन्फ़िरादिय्यत व ख़ुसूसिय्यत है कि वोह बूढ़ों और ज़ईफ़ों को भी बुलन्दियों से हम-कनार करता है, इस्लाम में बूढ़ों को बोझ समझ कर घर से निकाल देने और इन्हें किसी इदारे में "जम्अ़" करवा देने का कोई तसव्वुर नहीं, इस्लाम का तुर्रए इम्तियाज़ है कि इस दीने मुबीन में बिला तफ़रीक़े रंगो नस्ल व बिला इम्तियाज़े उ़म्रो क़द हर मुसल्मान अपना ख़ास मक़ाम रखता है, जिस का लिह़ाज़ रखना दूसरे मुसल्मान पर लाज़िम है, इस की मुख़्तसर वज़ाह़त **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना के मत़बूआ़ **32** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल "**एह़तिरामे मुस्लिम**" नामी रिसाले में भी की गई है। अल ग़रज़ ! हर मुसल्मान ख़्वाह वोह बूढा हो या जवान, नज़रे इस्लाम में उस की ख़ास अहम्मिय्यत व शान है। चुनान्चे

www.dawateislami.net

बुढ़ापे के फ़ज़ाइल

महबूबे रब्बे ज़ुल जलाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा कमाल है : ''सफ़ेद बाल न उखाड़ो क्यूं कि वोह मुस्लिम का नूर है, **जो शख़्स इस्लाम में बूढ़ा हुवा अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **इस की वज्ह से उस के लिये नेकी लिखेगा और ख़ता मिटा देगा और द-रजा बुलन्द करेगा ।''**

(ابوداؤد، کتاب الترجل، باب فی نتف الشیب، ٤/١١٥، حدیث: ٤٢٠٢)

हज़रते सय्यिदुना का'ब बिन मुर्रह رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे पुरनूर है : ''जो इस्लाम में बूढ़ा हुवा, येह बुढ़ापा **उस के लिये क़ियामत के दिन नूर होगा ।''**

(ترمذی، کتاب فضائل الجهاد، باب ماجاء فی فضل من شاب شیبة فی سبیل الله، ٣/٢٣٧، حدیث: ١٦٤١)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

लिहाज़ा ज़ईफ़ुल उ़म्र इस्लामी भाई भी दिल छोटा न करें और मायूसी की काली घटा अपने ऊपर त़ारी न होने दें कि **''जब जागे हुवा सवेरा ।''**

किसी ने क्या ख़ूब कहा है :

है बुढ़ापा भी ग़नीमत जब जवानी हो चुकी
येह बुढ़ापा भी न होगा, मौत जिस दम आ गई

अगर सफ़रे ह़यात के किसी भी मोड़ पर शुऊ़र बेदार हो जाए तो भी मायूस न हों बल्कि उसे ग़नीमत तसव्वुर कीजिये

www.dawateislami.net

और सुब्हे ज़िन्दगी की शाम होने से पहले पहले आहो ज़ारी और तक़्वा व परहेज़ गारी के ज़रीए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को राज़ी करने की कोशिशों में मसरूफ़ हो जाइये और उम्मीदो बीम (या'नी उम्मीद व ख़ौफ़) के मिले जुले जज़्बात के सहारे, दामन पसारे (फैलाए), **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह की तरफ़ रुजूअ़ कीजिये, इस आयते उम्मीद अफ़्ज़ा "لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ" (**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह** की रह़मत से ना उम्मीद न हो । (پ٢٤،الزُّمر:٥٣)) को पेशे नज़र रखिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ना उम्मीद व ख़ाली दामन नहीं बल्कि मग़्फ़िरतों और बख़्शिशों की दौलते ला ज़वाल से मालामाल हो कर पलटेंगे ।

न हो नौमीद, नौमीदी ज़वाले इल्मो इरफ़ां है
उमीदे मर्दे मोमिन है ख़ुदा के राज़दानों में

और येह भी ज़ेह्न नशीन रहे कि उ़म्र के किसी भी हिस्से में ख़्वाह बुढ़ापे में ही सही, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा करना ख़ुश बख़्तों का हिस्सा है वरना फ़ी ज़माना कई ह़ज़रात बुढ़ापे की दहलीज़ पर क़दम रखने के बा वुजूद मुख़्तलिफ़ क़िस्म के खेलों और दीगर ह़राम कामों में सामाने लज़्ज़त तलाश करने की कोशिश में मसरूफ़ रहते हैं। जवानी तो पहले ही ग़फ़्लत में बरबाद कर दी, बुढ़ापे में भी तौफ़ीक़े ख़ैर न मिली, तो अब ज़िन्दगी के और कौन से लम्ह़ात ऐसे मिलेंगे कि जिन में आख़िरत की तय्यारी मुम्किन हो सके ?

कर न पीरी में तू ग़फ़्लत इख़्तियार ज़िन्दगी का अब नहीं कुछ ए'तिबार
ह़ल्क़ पर है मौत के ख़न्जर की धार कर बस अब अपने को मुर्दों में शुमार

www.dawateislami.net

एक दिन मरना है आख़िर मौत है
कर ले जो करना है आख़िर मौत है

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد
تُوْبُوْا اِلَى الله ! اَسْتَغْفِرُ الله
صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें अपनी जवानी की क़द्र करनी चाहिये वरना बुढ़ापे में बा'ज़ अवक़ात पछतावे के साए परेशान करते हैं और उस वक़्त कुछ बन नहीं पड़ता, बन्दा कुछ करना चाहता है लेकिन ह़ौसला साथ नहीं देता, जवानी को याद करता है लेकिन जवानी ने तो वापस आना नहीं और बुढ़ापे से उक्ताता है मगर उस ने भी जाना नहीं और न उस वक़्त पछताने का कोई फ़ाएदा है।

जो आ के न जाए वोह बुढ़ापा देखा
जो जा के न आए वोह जवानी देखी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन जवानी की इबादत के बहुत ज़ियादा फ़ज़ाइल हैं, जवानी में इबादत करने और अपने आप को गुनाहों से बचा कर रखने वाले को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किस त़रह़ नवाज़ता है चुनान्चे

सालेह़ नौ जवान को मिलने वाला इन्आ़म

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना के मत़्बूआ़ **56** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले "**करामाते फ़ारूक़े**

www.dawateislami.net

आ'ज़म'' सफ़हा **24** पर है : मुशीरे रसूल, अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक मर्तबा एक सालेह़ (या'नी परहेज़ गार) नौ जवान की **क़ब्र** पर तशरीफ़ ले गए और फ़रमाया : ऐ फ़ुलां ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने वा'दा फ़रमाया है :

وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ ۚ﴿۴۶﴾
(پ ۲۷،الرّحمٰن :۴۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जो अपने रब के हुज़ूर खड़े होने से डरे उस के लिये दो जन्नतें है ।

ऐ नौ जवान ! बता ! तेरा **क़ब्र** में क्या ह़ाल है ? उस सालेह़ (बा अ़मल) नौ जवान ने **क़ब्र** के अन्दर से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का नाम ले कर पुकारा और ब आवाज़े बुलन्द दो मर्तबा जवाब दिया : **''قَدْ اَعْطَانِیْهِمَا رَبِّیْ عَزَّوَجَلَّ فِی الْجَنَّةِ''** या'नी मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ने **येह दोनों जन्नतें मुझे अ़ता फ़रमा दी हैं ।''**

(تاریخ مدینه دمشق،۴۵/۴۵۰)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! इस वाक़िए से पता चला कि जो शख़्स नेकियों भरी ज़िन्दगी गुज़ारेगा और ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से लरज़ां व तरसां रहेगा, वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मते कामिला से दो जन्नतों का मुस्तह़िक़ ठहरेगा । लिहाज़ा जवानी को नेकी व परहेज़ गारी में सर्फ़ कीजिये, ख़्वाहिशाते नफ़्सानी की पैरवी से बचिये, अभी से संभल जाइये ! याद रखिये ! येह हुस्नो जवानी दौलते फ़ानी है और इस पर ग़ुरूर व **तकब्बुर** ह़माक़त व नादानी है ।

www.dawateislami.net

ढल जाएगी येह जवानी जिस पे तुझ को नाज़ है तू बजा ले चाहे जितना चार दिन का साज़ है

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

تُوْبُوْا اِلَى الله! اَسْتَغْفِرُ الله

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अब दो आ़बिद व ख़ाइफ़ नौ जवानों के ह़ैरत अंगेज़ वाक़िआ़त मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये और देखिये कि यादे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से दिलों को आबाद करने वालों को कैसी करामात से नवाज़ा जाता है चुनान्चे

बा करामत नौ जवान

ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं कि एक सफ़र के दौरान मुझे सख़्त प्यास लगी तो मैं पानी की तलाश में एक वादी की जानिब चल पड़ा। अचानक मैं ने एक ख़ौफ़नाक आवाज़ सुनी, तो सोचा : शायद ! कोई दरिन्दा है जो मेरी त़रफ़ आ रहा है। चुनान्चे मैं भागने ही वाला था कि पहाड़ों से किसी ने मुझे पुकार कर कहा : ''ऐ इन्सान ! ऐसा कोई मुआ़-मला नहीं जिस त़रह़ तुम समझ रहे हो, येह तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का एक वली है जिस ने शिद्दते ह़सरत से एक लम्बी सांस ली तो उस की आवाज़ बुलन्द हो गई।'' जब मैं अपने रास्ते की जानिब वापस पलटा तो एक **नौ जवान को इबादत में मश्ग़ूल पाया।** मैं ने उसे सलाम किया और अपनी प्यास का बताया तो उस ने कहा : ''ऐ मालिक (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه) !

www.dawateislami.net

इतनी बड़ी सल्त़नत में तुझे पानी का एक क़त़रा भी नहीं मिला।'' फिर वोह चट्टान की त़रफ़ गया और उसे ठोकर मार कर कहने लगा : ''उस ज़ात की क़ुदरत से हमें पानी से सैराब कर जो बोसीदा हड्डियों को भी ज़िन्दा फ़रमाने पर क़ादिर है।'' **अचानक चट्टान से पानी ऐसे बहने लगा जैसे चश्मे से बहता है।** मैं ने जी भर कर पीने के बा'द अ़र्ज़ की : ''मुझे ऐसी चीज़ की नसीह़त फ़रमाइये जिस से मुझे नफ़्अ़ होता रहे।'' तो उस ने कहा : ''**तन्हाई में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इबादत में मश्ग़ूल हो जाइये,** वोह (रब عَزَّوَجَلَّ) आप को जंगलात में पानी से सैराब कर देगा।'' इतना कह कर वोह अपने रास्ते पर चला गया।

(الروض الفائق، ص١٦٦، بتصرفٍ)

मेरी ज़िन्दगी बस तेरी बन्दगी में ही ऐ काश ! गुज़रे सदा या इलाही

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सालेह़ व ख़ाइफ़ नौ जवान

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى एक बार मुल्के शाम तशरीफ़ ले गए, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का गुज़र एक निहायत सर सब्ज़ो शादाब ख़ुशनुमा बाग़ से हुवा, तो देखा कि **एक नौ जवान सेब के दरख़्त के नीचे नमाज़ में मश्ग़ूल है।** आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को उस सालेह़ जवान से हम-कलामी का इश्तियाक़ हुवा। जब उस ने सलाम फैरा तो मैं ने उसे अपनी जानिब मु-तवज्जेह करने की कोशिश की तो उस ने जवाब देने

www.dawateislami.net

के बजाए ज़मीन पर येह शे'र लिख दिया :

مُنِعَ اللِّسَانُ مِنَ الْكَلَامِ لِاَنَّهٗ كَهْفُ الْبَلَاءِ وَجَالِبُ الْاٰفَاتِ
فَاِذَا نَطَقْتَ فَكُنْ لِّرَبِّكَ ذَاكِرًا لَا تَنْسَهٗ وَاَحْمِدْهُ فِي الْحَالَاتِ

या 'नी ज़बान कलाम से रोक दी गई है क्यूं कि येह (ज़बान) त़रह़ त़रह़ की बलाओं का ग़ार और आफ़ात लाने वाली है इस लिये जब बोलो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करो, उसे किसी वक़्त फ़रामोश न करो और हर ह़ाल में उस की ह़म्द बजा लाते रहो।

नौ जवान की इस तह़रीर का आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के क़ल्बे अन्वर पर गहरा असर हुवा और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه पर गिर्या त़ारी हो गया। जब इफ़ाक़ा हुवा तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने भी जवाबन ज़मीन पर उंगली से येह अश्आ़र लिख दिये :

وَمَا مِنْ كَاتِبٍ اِلَّا سَيَبْلٰى وَيُبْقِي الدَّهْرُ مَا كَتَبَتْ يَدَاهُ
فَلَا تَكْتُبْ بِكَفِّكَ غَيْرَ شَيْءٍ يَسُرُّكَ فِي الْقِيَامَةِ اَنْ تَرَاهُ

या 'नी हर लिखने वाला एक दिन क़ब्र में जा मिलेगा मगर उस की तह़रीर हमेशा बाक़ी रहेगी इस लिये अपने हाथ से ऐसी बात लिखो जिसे देख कर बरोज़े क़ियामत तुम्हें ख़ुशी मिले।

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي का बयान है कि मेरा नविश्ता (तह़रीर) पढ़ कर उस जवाने सालेह़ ने एक चीख़ मारी और अपनी जान जाने आफ़रीं के सिपुर्द कर दी। मैं ने सोचा कि इस की तज्हीज़ो तक्फ़ीन का इन्तिज़ाम कर दूं मगर हातिफ़े ग़ैबी ने आवाज़ दी : **ज़ुन्नून !** इसे रहने दो, रब्बे काएनात عَزَّوَجَلَّ ने इस से अ़ह्द किया है कि फ़िरिश्ते तेरी तज्हीज़ो

www.dawateislami.net

तक्फ़ीन करेंगे । येह सुन कर आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه बाग़ के एक गोशे में मसरूफ़े इ़बादत हो गए और चन्द रक्अ़ात पढ़ने के बा'द देखा तो वहां उस नौ जवान का नामो निशान भी न था ।
(روض الرياحين، ص٤٩،بتصرفٍ)

रहूं मस्तो बेख़ुद मैं तेरी विला में
पिला जाम ऐसा पिला या इलाही !

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सायए अ़र्श पाने वाले ख़ुश नसीब

जवानी में इ़बादत करने और ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ रखने वालों को मुबारक हो कि बरोज़े क़ियामत जब सूरज एक मील पर रह कर आग बरसा रहा होगा, सायए अ़र्श के इ़लावा उस जां गुज़ा (या'नी जान को अज़िय्यत देने वाली) गरमी से बचने का कोई ज़रीआ़ न होगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ऐसे **ख़ुश क़िस्मत नौ जवान को अपने अ़र्श का सायए रह़मत अ़त़ा फ़रमाएगा** जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अ़ब्दुर्रह़मान जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِی नक़्ल फ़रमाते हैं **:** ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की त़रफ़ ख़त़ लिखा कि "इन सिफ़ात के ह़ामिल **मुसल्मान अ़र्श के साए में होंगे :** (उन में से दो येह हैं) (1)...... वोह शख़्स जिस की नश्वो नमा इस ह़ाल में हुई कि उस की **सोह़बत, जवानी और कुव्वत अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पसन्द और रिज़ा वाले कामों में सर्फ़ हुई और (2)...... वोह शख़्स जिस ने **अल्लाह**

www.dawateislami.net

عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र किया और उस के ख़ौफ़ से उस की आंखों से आंसू बह निकले।''

(مُصَنَّف اِبْنِ اَبِی شَیْبَة، کتاب الزهد، کلام سلمان، ۱۷۹/۸، حدیث:۱۲، ملتقطاً)

या रब ! मैं तेरे ख़ौफ़ से रोता रहूं अक्सर
तू अपनी महब्बत में मुझे मस्त बना दे

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हमारे अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام **जवानी** की बहुत क़द्र करते और इस की क़द्र करने की तल्क़ीन भी फ़रमाते चुनान्चे

इमाम ग़ज़ाली की नसीहत

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِی जवानों और तौबा में टाल मटोल करने वालों को समझाते हुए इर्शाद फ़रमाते हैं : ''क्या तुम ग़ौर नहीं करते कि तुम कब से अपने नफ़्स से वा'दा कर रहे हो कि कल अ़मल करूंगा, कल करूंगा और **वोह ''कल'' ''आज'' में बदल गया।** क्या तुम नहीं जानते कि जो ''कल'' आया और चला गया वोह गुज़श्ता ''कल'' में तब्दील हो गया बल्कि अस्ल बात येह है कि तुम ''आज'' अ़मल करने से आ़जिज़ हो तो ''कल'' ज़ियादा आ़जिज़ होगे (आज का काम कल पर छोड़ने और तौबा व इत़ाअ़त में ताख़ीर करने वाला) उस आदमी की त़रह़ है कि जो दरख़्त को उखाड़ने से जवानी में आ़जिज़ हो और उसे दूसरे साल तक मुअख़्ख़र कर दे ह़ालां कि

www.dawateislami.net

वोह जानता है कि जूं जूं वक़्त गुज़रता चला जाएगा दरख़्त ज़ियादा मज़बूत़ और पुख़्ता होता जाएगा और उखाड़ने वाला कमज़ोर-तर होता जाएगा पस जो उसे जवानी में न उखाड़ सका वोह बुढ़ापे में क़त्अ़न न उखाड़ सकेगा।" (اِحیاءُ العُلوم،٤/٧٢)

उतरते चांद ढलती चांदनी जो हो सके कर ले
अंधेरा पाख आता है येह दो दिन की उजाली है

(ह़दाइके़ बख़्शिश)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इमाम ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی का येह मुबारक फ़रमान किस क़दर फ़िक्र अंगेज़ है कि जो शख़्स जवानी में अह़कामे शरइय्या व इत़ाअ़ते इलाहिय्यह की बजा आ-वरी में कोताही बरतता है तो उस से कैसे उम्मीद रखी जा सकती है कि वोह बुढ़ापे में इन ग़-लत़ियों का मुदावा कर सकेगा क्यूं कि उस वक़्त तो जिस्म व आ'ज़ा कमज़ोरी का शिकार हो चुके होंगे लिहाज़ा **जवानी** को ग़नीमत जानिये और इसी उ़म्र में नफ़्स के बे लगाम और मुंहज़ोर घोड़े को लगाम दे दीजिये और तौबा करने में जल्दी कीजिये कि न जाने किस वक़्त पैग़ामे अजल (या'नी मौत का पैग़ाम) आ जाए क्यूं कि मौत तो न जवानी का लिह़ाज़ करती है न बचपन की परवाह।

मौत न देखे हुस्नो जवानी न येह देखे बचपन ख़्वाह हो उ़म्र अठारह बरसी या हो जावे पचपन

लिहाज़ा ख़्वाह उ़म्र का कोई भी ह़िस्सा हो, मौत को पेशे नज़र रखिये, तौबा करने में जल्दी कीजिये और जवान तो

www.dawateislami.net

इस पर ज़ियादा ध्यान दे कि जवानी की तौबा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को बहुत पसन्द है चुनान्चे

जवानी में तौबा की फ़ज़ीलत

अल्लाह के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''اِنَّ اللّٰهَ تَعَالٰى يُحِبُّ الشَّابَّ التَّائِبَ या'नी जवानी में तौबा करने वाला शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का महबूब है।''

(کنز العمّال، کتاب التوبة، الفصل الاول فی الخ، الجزء٤، ٨٧/٣، حدیث:١٠١٨١)

जवानी में तौबा करने वाला महबूब क्यूं ?

मुबल्लिगे़ इस्लाम हज़रते अ़ल्लामा शैख़ शुऐ़ब हरीफ़ीश رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अपने बन्दे से महब्बत उस वक़्त होती है जब कि वोह जवानी में तौबा करने वाला हो क्यूं कि नौ जवान तर और सर सब्ज़ टहनी की त़रह़ होता है। जब वोह अपनी जवानी और हर त़रफ़ से शहवात व लज़्ज़ात से लुत़्फ़ उठाने और इन की रग़बत पैदा होने की उ़म्र में तौबा करता है, और येह ऐसा वक़्त होता है कि दुन्या उस की त़रफ़ मु-तवज्जेह होती है। इस के बा वुजूद महज़ रिज़ाए इलाही के लिये वोह उन तमाम चीज़ों को तर्क कर देता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की महब्बत का मुस्तह़िक़ बन जाता है और उस के मक़्बूल बन्दों में उस का शुमार होने लगता है।'' (ह़िकायतें और नसीह़तें, स. 75)

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुर-सलीन, जनाबे रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को तौबा करने वाले नौ जवान से ज़ियादा पसन्दीदा कोई नहीं।" (کنز العمال،کتاب المواعظ۔۔الخ، الترغیب الاحاذی، الجزء:۱۵، ۳۳۲/۸، حدیث:۴۳۱۰۱)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जवानी में इस्तिग़फ़ार कीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जवानी में इ़बादत व तौबा की त़रफ़ माइल होने वाला नौ जवान किस क़दर सआ़दत मन्द है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे अपना प्यारा बन्दा बना लेता है। सच है कि

دَرْ جوانی توبہ کردن شیوۂ پیغمبری
وَقتِ پیری گرگِ ظالم مِی شَوَد پرہیزگار

या'नी जवानी में इस्तिग़फ़ार करना अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की सुन्नत है, वरना बुढ़ापे में तो ज़ालिम भेड़िया भी परहेज़ गारी का लबादा ओढ़ लेता है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

एक वस्वसा और उस का इलाज

वस्वसा : मज़्कूरा शे'र में तौबा व इस्तिग़फ़ार को सुन्नते अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام कहा गया है, ह़ालां कि तौबा तो गुनाह पर की

www.dawateislami.net

जाती है तो क्या مَعَاذَاللّٰه अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से भी गुनाह सरज़द हो सकते हैं ?

इलाजे वस्वसा : नहीं, हरगिज़ नहीं, ह़ज़राते अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام हर ख़त़ा व गुनाह से मा'सूम हैं और मा'सूम के येह मा'ना हैं कि इन के लिये हिफ़्ज़े इलाही का वा'दा हो चुका जिस की वज्ह से इन से गुनाह होना शरअ़न ना मुम्किन है, नीज़ ऐसे अफ़्आ़ल से जो वजाहत और मुरव्वत के ख़िलाफ़ हैं क़ब्ले नुबुव्वत और बा'दे नुबुव्वत बिल इज्माअ़ मा'सूम हैं और कबाइर से भी मुत्लक़न मा'सूम हैं और ह़क़ येह है कि तअ़म्मुदे सग़ाइर से भी क़ब्ले नुबुव्वत और बा'दे नुबुव्वत मा'सूम हैं।

(मुलख़्ख़स अज़ ''बहारे शरीअ़त'', जिल्द अव्वल, सफ़ह़ा 38 ता 39)

वोह कमाले हुस्ने हुज़ूर है कि गुमाने नक़्स जहां नहीं
येही फूल ख़ार से दूर है येही शम्अ़ है कि धुवां नहीं

(ह़दाइक़े बख़्शिश)

अम्बियाए किराम व मुर-सलीने उ़ज़्ज़ाम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से जो तौबा व इस्तिग़्फ़ार के मा'मूलात मन्क़ूल हैं वोह बत़ौरे आ़जिज़ी और ता'लीमे उम्मत के लिये हैं। इसी लिये तौबा व इस्तिग़्फ़ार को मज़्कूरा शे'र में अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की सुन्नत कहा गया है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जवानों को नसीह़त

ह़ुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन

www.dawateislami.net

मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي तहरीर फ़रमाते हैं : हज़रते मन्सूर बिन अम्मार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار ने एक नौ जवान को नसीहत करते हुए कहा : ऐ जवान ! तुझे तेरी **जवानी** धोके में न डाले, कितने ही जवान ऐसे थे जिन्हों ने तौबा को मुअख़्ख़र और अपनी उम्मीदों को तवील कर दिया, मौत को भुला दिया और कहते रहे कि कल तौबा कर लेंगे, परसों तौबा कर लेंगे यहां तक कि इसी ग़फ़्लत में **म-लकुल मौत** आ गए और वोह ग़ाफ़िल अंधेरी क़ब्र में जा सोए । उन्हें न माल ने, न ग़ुलामों ने, न औलाद और न ही मां बाप ने कोई फ़ाएदा दिया ।

يَوْمَ لَا يَنْفَعُ مَالٌ وَّلَا بَنُوْنَ ﴿۸۸﴾ اِلَّا مَنْ اَتَى اللّٰهَ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ﴿۸۹﴾

(پ۱۹، الشعراء، آیت:۸۸،۸۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जिस दिन न माल काम आएगा न बेटे, मगर वोह जो **अल्लाह** के हुज़ूर हाज़िर हुवा सलामत दिल ले कर ।

(مُكَاشَفَةُ الْقُلُوب، ص۸۷)

रोती है शबनम कि नैरंगे जहां कुछ भी नहीं — ख़न्दा-ज़न हैं बुलबुलें गुल का निशां कुछ भी नहीं
चार दिन की चांदनी है फिर अंधेरी रात है — येह तेरा हुस्नो शबाब ऐ नौ जवां ! कुछ भी नहीं

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

تُوْبُوْا اِلَى الله ! اَسْتَغْفِرُ الله

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आख़िरत की तय्यारी करने, गुनाहों से बचने, नेकियों पर इस्तिक़ामत पाने और अपनी जवानी को म-दनी रंग में रंगने के लिये **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की

www.dawateislami.net

तरबिय्यत के लिये **आ़शिक़ाने रसूल** के **म-दनी क़ाफ़िलों** में सुन्नतों भरा सफ़र इख़्तियार कीजिये और काम्याब ज़िन्दगी गुज़ारने और आख़िरत संवारने के लिये **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल कर के रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए़ म-दनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कीजिये और हर माह अपने ज़िम्मादार को जम्अ़ करवाइये । हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त में ख़ूब शिर्कत कीजिये, तौबा पर इस्तिक़ामत पाने और इस के मु-तअ़ल्लिक़ तफ़्सीली मा'लूमात जानने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ **132** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **''तौबा की रिवायात व ह़िकायात''** का मुता़-लआ़ कीजिये नीज़ इ़ल्मो ह़िक्मत के मोती चुनने के लिये म-दनी मुज़ा-करे में शिर्कत कीजिये, बाबुल मदीना से बाहर के इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें **म-दनी चेनल** के ज़रीए़ ह़ाज़िरी दें ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

म-दनी चेनल क्या है ?

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ किताब **''ग़ीबत की तबाह कारियां''** सफ़ह़ा **86** पर है : اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के मु-तअ़द्दद शो'बे हैं जिन के ज़रीए़ दुन्या में इस्लाम की बहारें लुटाई जा रही हैं, इन्हीं में

www.dawateislami.net

एक शो'बा **''म-दनी चेनल''** भी है जिस के ज़रीए दुन्या के कई ममालिक में **T.V.** के ज़रीए घरों के अन्दर दाख़िल हो कर **दा'वते इस्लामी** इस्लाम का पैग़ाम आ़म कर रही है । **म-दनी चेनल** दुन्या का वाहिद चेनल है जो कि सो फ़ीसदी इस्लामी रंग में रंगा हुवा है, इस में न फ़िल्में डिरामे हैं, न गाने बाजे और न औ़रत की नुमाइश है, न ही किसी क़िस्म की मूसीक़ी । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **म-दनी चेनल** के ज़रीए **कई कुफ़्फ़ार दामने इस्लाम में आ चुके हैं,** बे शुमार बे नमाज़ी नमाज़ों के पाबन्द बने हैं और ला ता'दाद अफ़्राद गुनाहों से ताइब हो कर सुन्नतों पर अ़मल करने लगे हैं । **म-दनी चेनल** की ब-र-कतों का अन्दाज़ा लगाने के लिये इस की एक **म-दनी बहार** मुला-हज़ा हो चुनान्चे एक इस्लामी भाई ने मुझे बर्क़ी डाक (E-MAIL) के ज़रीए एक ''म-दनी बहार'' पेश की, उस का लुब्बे लुबाब येह है : आज कल येह ह़ाल है कि दौराने गुफ़्त-गू अक्सर इस बात का अन्दाज़ा नहीं हो पाता कि **ग़ीबत** का सिल्सिला शुरूअ़ हो चुका है ! एक बार ह़ैदरआबाद (बाबुल इस्लाम सिन्ध) से बाबुल मदीना आए हुए एक इस्लामी भाई ने चन्द इस्लामी भाइयों की मौजू-दगी में कहा : मेरे एक दोस्त ने मुझे बताया कि मेरी बहन जो कि इन्तिहाई **ग़ुसीली** त़बीअ़त की है, अगर कभी किसी से नाराज़ हो जाए तो ख़ुद से बढ़ कर मुलाक़ात में पहल नहीं करती, मेरी भाभी और बहन में चन्द मुआ़-मलात की बिना पर आपस में चप-क़लश हुई और बहन ने बातचीत बन्द कर दी,

www.dawateislami.net

हुस्ने इत्तिफ़ाक़ कि उसी रात **दा'वते इस्लामी** के हर दिल अ़ज़ीज़ सो फ़ीसदी इस्लामी **म-दनी चेनल** पर "म-दनी मुज़ा-करा" नश्र किया गया जिस में **ग़ीबत की तबाह कारियों** से बचने का ज़ेहन दिया गया था। मेरी बहन ने जब वोह म-दनी मुज़ा-करा सुना तो اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मेरी वोही **ग़ुसीली** बहन जो बढ़ कर किसी से मुलाक़ात नहीं करती थी अज़ ख़ुद आगे बढ़ी और उस ने मेरी भाभी से न सिर्फ़ मुलाक़ात की बल्कि मुआ़फ़ी भी मांगी और दोनों में सुल्ह़ हो गई।

नाच गानों और फ़िल्मों से येह चेनल पाक है　　म-दनी चेनल ह़क़ बयां करने में भी बेबाक है
म-दनी चेनल में नबी की सुन्नतों की धूम है　　और शैत़ाने लईं रन्जूर है, मग़मूम है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب!　　صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, नोशए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जिस ने मेरी **सुन्नत** से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह **जन्नत** में मेरे साथ होगा।" (مِشْكَاةُ الْمَصَابِيح، ۱/۵۵ حديث: ۱۷۵)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा　　जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب!　　صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

"मदीने की हाज़िरी" के बारह हुरूफ़ की निस्बत से घर में आने जाने के 12 म-दनी फूल

﴾1﴿ जब घर से बाहर निकलें तो येह दुआ पढ़िये : بِسْمِ اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ" **तरजमा : अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम से, मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर भरोसा किया, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बिग़ैर न ताक़त है न क़ुव्वत।" (سنن ابی داؤد، ج٤ ص٤٢٠ حدیث٥٠٩٥) اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस दुआ को पढ़ने की ब-र-कत से सीधी राह पर रहेंगे, आफ़तों से हिफ़ाज़त होगी और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मदद शामिले हाल रहेगी ﴾2﴿ घर में दाख़िल होने की दुआ :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُکَ خَیْرَ الْمَوْلَجِ وَخَیْرَ الْمَخْرَجِ بِسْمِ اللّٰهِ وَلَجْنَا وَبِسْمِ اللّٰهِ خَرَجْنَا وَعَلَى اللّٰهِ رَبِّنَا تَوَكَّلْنَا.

(اَیضاً۔حدیث٥٠٩٦) (**तरजमा :** ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से दाख़िल होने और निकलने की भलाई मांगता हूं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम से हम (घर में) दाख़िल हुए और उसी के नाम से बाहर आए और अपने रब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर हम ने भरोसा किया) दुआ पढ़ने के बा'द घर वालों को सलाम करे फिर बारगाहे रिसालत عَلَيْهِ التَّحِيَّةُ وَالثَّنَاء में सलाम अ़र्ज़ करे, इस के बा'द **सू-रतुल इख़्लास** शरीफ़ पढ़े। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ रोज़ी में ब-र-कत और घरेलू झगड़ों से

www.dawateislami.net

बचत होगी । ﴾**3**﴿ अपने घर में आते जाते महारिम व महूरमात (म-सलन मां, बाप, भाई, बहन, बाल बच्चे वग़ैरा) को सलाम कीजिये ﴾**4**﴿ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नाम लिये बिग़ैर म-सलन **بسم الله** कहे बिग़ैर जो घर में दाख़िल होता है शैत़ान भी उस के साथ दाख़िल हो जाता है ﴾**5**﴿ अगर ऐसे मकान (ख़्वाह अपने ख़ाली घर) में जाना हो कि उस में कोई न हो तो येह कहिये : اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصّٰلِحِيْنَ (या'नी हम पर और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों पर सलाम) फ़िरिश्ते उस सलाम का जवाब देंगे । (ردالمحتار، ج۹، ص٦٨٢) या इस त़रह़ कहे : اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ (या'नी या नबी ! आप पर सलाम) क्यूं कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रूह़े मुबारक मुसल्मानों के घरों में तशरीफ़ फ़रमा होती है । (شرح الشفاء للقاری، ج۲ ص۱۱۸) ﴾**6**﴿ जब किसी के घर में दाख़िल हों तो इस त़रह़ कहिये : اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ क्या मैं अन्दर आ सकता हूं ? ﴾**7**﴿ अगर दाख़िले की इजाज़त न मिले तो ब ख़ुशी लौट जाइये हो सकता है किसी मजबूरी के तह़्त साह़िबे ख़ाना ने इजाज़त न दी हो ﴾**8**﴿ जब आप के घर पर कोई दस्तक दे तो सुन्नत येह है कि पूछिये : कौन है ? बाहर वाले को चाहिये कि अपना नाम बताए : म-सलन कहे : ''मुह़म्मद इल्यास ।'' नाम बताने के बजाए इस मौक़अ़ पर ''मदीना !'', ''मैं हूं ।'', ''दरवाज़ा

www.dawateislami.net

खोलो'' वग़ैरा कहना सुन्नत नहीं ﴾9﴿ जवाब में नाम बताने के बा'द दरवाज़े से हट कर खड़े हों ताकि दरवाज़ा खुलते ही घर के अन्दर नज़र न पड़े ﴾10﴿ किसी के घर में झांकना मम्नूअ़ है बा'ज़ लोगों के मकान के सामने नीचे की त़रफ़ दूसरों के मकानात होते हैं उन को सख़्त एह़तियात़ की ह़ाजत है ﴾11﴿ किसी के घर जाएं तो वहां के इन्तिज़ामात पर बे जा तन्क़ीद न करें इस से उस की दिल आज़ारी हो सकती है ﴾12﴿ वापसी पर अहले ख़ाना के ह़क़ में दुआ़ भी कीजिये और शुक्रिया भी अदा कीजिये और सलाम भी कीजिये और हो सके तो कोई सुन्नतों भरा रिसाला वग़ैरा भी तोह़्फ़तन पेश कीजिये।

ढेरों सुन्नतें सीखने के लिये मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ दो कुतुब बहारे शरीअ़त ह़िस्सा **16** (**312** सफ़ह़ात) नीज़ **120** सफ़ह़ात की किताब **''सुन्नतें और आदाब''** हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

(101 म-दनी फूल, स. 23)

सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो
होंगी ह़ल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो पाओगे ब-र-कतें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक मरतबा दुरूद पढ़ा **अल्लाह** उस पर दस रह़मतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

फ़ेहरिस

उ़न्वान	सफ़ह़	उ़न्वान	सफ़ह़
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	फ़िरिश्तों से अफ़्ज़ल कौन ?	17
जवानी की तलाश	1	नौ जवानाने मिल्लत और दा'वते इस्लामी	19
ईंट के जवाब में फूल पेश कीजिये !	4	बेहतरीन ज़िन्दगी का राज़	20
नेकी की दा'वत आ़म कीजिये !	5	सत्तर सिद्दीक़ीन का सवाब पाने वाला	21
मताए वक़्त की क़द्र कीजिये !	6	**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ह़क़ीक़ी बन्दा	21
जवानी की ता'रीफ़	7	बा ह़या नौ जवान	22
फ़ैज़ाने क़ुरआन और नौ जवान	7	जवानी ने'मते ख़ुदा वन्दी	23
जवानी की इ़बादत बुढ़ापे में सबबे आ़फ़िय्यत	8	इ़बादत गुज़ार जवान की फ़ज़ीलत	24
मद्र-सतुल मदीना बालिग़ान	9	बुढ़ापे के फ़ज़ाइल	26
मद्र-सतुल मदीना बालिग़ात	9	सालेह़ नौ जवान को मिलने वाला इन्आ़म	28
म-दनी माह़ौल ने अदना को आ'ला कर दिया	10	बा करामत नौ जवान	30
जवानी को ग़नीमत जानिये !	11	सालेह़ व ख़ाइफ़ नौ जवान	31
जवानी की क़द्र कीजिये !	12	सायए अ़र्श पाने वाले ख़ुश नसीब	33
ब वक़्ते रिह़लत ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया का फ़रमान	13	इमाम ग़ज़ाली की नसीह़त	34
बुज़ुर्गों की आ़जिज़ी हमारे लिये रहनुमाई	13	जवानी में तौबा की फ़ज़ीलत	36
इ़बादत की ब-र-कत से बुढ़ापे में भी जवान	14	जवानी में तौबा करने वाला मह़बूब क्यूं ?	36
जवानी की मेह़नत बुढ़ापे में सहूलत	15	जवानी में इस्तिग़फ़ार कीजिये	37
सालेह़ जवान के लिये बुढ़ापे में इन्आ़म	16	एक वस्वसा और उस का इ़लाज	37
अल्लाह का मह़बूब बन्दा	17	जवानों को नसीह़त	38
		म-दनी चेनल क्या है ?	40
		घर में आने जाने के 12 म-दनी फूल	43
		मआख़िज़ो मराजेअ़	47

www.dawateislami.net

ماخذومراجع

قرآن مجید

نمبر شمار	کتاب	مطبوعہ
1	کنزالایمان فی ترجمۃ القرآن	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
2	جامع ترمذی	د ار المعرفہ، بیروت ١٤١٤ھ
3	سنن ابی داؤد	دار احیاء التراث العربی، بیروت ١٤٢١ھ
4	مسند ابی یعلی	دار الکتب العلمیہ، بیروت ١٤١٨ھ
5	مصنف ابن ابی شیبہ	المجلس العلمی بیروت١٤٢٧ھ
6	مشکاۃالمصابیح	د ار الکتب العلمیہ بیروت ١٤٢١ھ
7	کنزالعمال	دار الکتب العلمیہ، بیروت ١٤١٩ھ
8	جمع الجوامع	دارالکتب العلمیہ ١٤٢١ھ
9	مرقاۃ المفاتیح	دار الفکر، بیروت ١٤١٤ھ
10	حلیۃ الاولیاء	دارالکتب العلمیہ، بیروت ١٤١٨ھ
11	تاریخ مدینہ دمشق	دارالفکر بیروت 1995ء
12	ردالمحتار	دار المعرفہ، بیروت ١٤٢٠ھ
13	شرح شفا	دارالکتب العلمیۃ بیروت ١٤٢١ھ
14	احیاء العلوم	دار صادر بیروت 2000ء
15	لباب الاحیاء	دارالبیروتی 2004ء
16	مکاشفۃ القلوب	دارالکتب العلمیۃ بیروت لبنان
17	مجموعہ رسائل ابن رجب	الفاروق الحدیثیہ للطباعۃ والنشر، القاھر
18	روض الریاحین	دارالکتب العلمیۃ بیروت ١٤٢١ھ
19	الروض الفائق	دار احیاءالتراث العربی بیروت ١٤١٦ھ
20	الترغیب فی فضائل الاعمال	دارالکتب العلمیۃ بیروت ١٤٢٤ھ
21	تفسیر نعیمی	مکتبہ اسلامیہ، مرکز الاولیاء لاہور
22	نورالعرفان	پیر بھائی کمپنی، مرکز الاولیاء لاہور
23	مراۃ المناجیح	نعیمی کتب خانہ گجرات
24	فتاوی رضویہ	رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیاء لاہور
25	بہار شریعت	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ١٤٢٩ھ
26	فیضان سنت	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
27	کرامات فاروق اعظم	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
28	حکایتیں اور نصیحتیں	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی 2008ء
29	بوستان سعدی	انتشارات عالمگیر، تہران
30	حدائق بخشش	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ١٤٣٣ھ
31	ذوق نعت	ضیاء الدین پبلی کیشنز 1992ء
32	وسائل بخشش مرمم	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ١٤٣٥ھ

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तहरीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके म-दनी माहौल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इ़शा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आ़शिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की हिफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ" अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये **"म-दनी इन्आ़मात"** पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये **"म-दनी क़ाफ़िलों"** में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मुम्बई : 19, 20, मुहम्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429
देहली : 421, मटिया महल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560
नागपुर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपुर : (M) 09373110621
अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़लाहे दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385
हैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786
हुब्ली : A.J. मुहोल कोम्प्लेक्स, A.J. मुहोल रोड, ओल्ड हुब्ली ब्रीज के पास, हुब्ली, कर्नाटक. फ़ोन : 08363244860

मक-त-बतुल मदीना®
दा'वते इस्लामी
फ़ैज़ाने मदीना, ग्री कोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net